भाषा का शिक्षण शास्त्र : पढ़ना और पढ़कर समझना

प्रो. जलालुद्दीन से विश्वंभर की बातचीत

लेखक परिचय :

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद में लगभग 14 वर्षों तक प्रोफेसर के पद पर कार्य करते हुए कार्यवाहक निदेशक के पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति, शिक्षा के जाने-माने अध्येता, विभिन्न संगठनों में शिक्षा सलाहकार, शिक्षा के सिद्धान्त और व्यवहार को कक्षा प्रक्रियाओं से जोड़ने के लिए इलाहाबाद, कलकत्ता, अलीगढ़, दिल्ली आदि में स्वयंसेवी संगठनों के साथ सतत कार्य, लगभग 100 राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शोधपत्र प्रकाशित।

सम्पर्क :

सी - 33, गंगोत्री एन्कलेव,
अलकनन्दा, नई दिल्ली-110019

शिक्षा विमर्श के पिछले अंक में छपी बातचीत का यह अगला भाग है। बच्चों के लिए पाठ्यसामग्री निर्माण चुनौती भरा होता है। बातचीत के इस भाग में बच्चों के लिए पाठ्यसामग्री के चयन के आधार, बच्चों के लेखन में विभिन्न स्तरों पर आने वाली समस्याएं, बच्चों में आलोचनात्मक पठन की क्षमता विकसित करने की जरूरत और विधियां, मूल्यांकन और हाल ही में एनसीईआरटी द्वारा निर्मित भाषा की पाठ्यपुस्तकों की समस्याओं पर केन्द्रित है।

निश्चित ही ये वे समस्याएं हैं जिनसे होते हुए हर शिक्षाकर्मी को गुजरना पड़ता है और इन समस्याओं से उभरने के लिए समुचित उत्तर और तरीके नहीं होने पर वह उन ही पद्धतियों की ओर उन्मुख होता है जो उसने स्वयं परम्परागत तरीकों से प्राप्त की हैं।

यह बातचीत पाठकों के सामने भाषा शिक्षण में बच्चों की व्यवहारिक समस्याओं और उनके समाधान के कुछ रास्ते सुझाती है। उम्मीद की जा सकती है कि इन समस्याओं से रूबरू होते हुए वह बहुत-सी समस्याओं के हल स्वयं खोजने की ओर प्रवृत्त होगा।

प्रश्न : क्या कक्षावार पाठ्यसामग्री निर्माण के लिए कुछ आधार हो सकते हैं ? यानी, यदि हम कहना चाहें कि कक्षा एक के लिए कैसी पठन सामग्री हो और कक्षा दो के लिए कैसी और इसी तरह तीसरी, चौथी और पांचवीं के लिए कैसी हो ? क्योंकि निश्चित ही पहली से पांचवीं तक में भाषा के स्तरों में कुछ तो फर्क होगा ही। क्या भाषा के स्तरों का कक्षावार वर्गीकरण किया जा सकता है ? यदि हां, तो इसके आधार क्या-क्या होंगे ?

उत्तर : दो-तीन मोटे-मोटे आधार हैं जिन्हें पूरी दुनिया में माना जाता है। एक, बच्चे की शब्दावली क्या है अर्थात् बच्चे के काम में आने वाली शब्दावली क्या है ? इससे यह तय करने में मदद मिलती है कि हम बच्चे को किस तरह की शब्दावली या नए शब्द सिखाना चाहते हैं। नए शब्दों को सिखाने के लिए संदर्भ के निर्माण का सवाल भी आएगा। इसके लिए शरीर के अंगों, घर के बर्तनों, स्कूल फर्नीचर, यातायात के साधनों और पेड़-पौधों आदि के नामों से शुरूआत की जाती है। इसके माध्यम से वास्तव में बच्चों के लिए वास्तविकता को, यथार्थ को छोटे-छोटे हिस्सों में संजोना होता है। अतः विषयों, संबंधों और प्रक्रियाओं से संबंधित शब्दावली से बच्चे का परिचय कराया जाता है। इसलिए आप प्राथमिक शिक्षा में देखेंगे कि पर्यावरण अध्ययन में ज्यादातर भाषा का परिचय है, अवधारणाओं का परिचय है और इनके संबंध को यथार्थ के साथ बनाने की बात की जाती है। इसके साथ ही उच्चारण के पैटर्न को भी साथ लेकर चलना पड़ता है। भारत में हम पढ़ने-लिखने की शुरूआत संयुक्ताक्षर से नहीं करते। पहले छोटे-छोटे शब्दों से शुरू करते हैं और इसी तरह पहली कक्षा में सरल वाक्य लेते हैं, जटिल नहीं लेते। दूसरी कक्षा में मिश्रित और थोड़े जटिल

वाक्य भी लेते हैं। दूसरी कक्षा में ही छोटे-छोटे वाक्यों को जोड़ना और बड़े वाक्यों को तोड़ना सिखाया जाता है। व्याकरण पर दूसरी कक्षा में काम करवाते हैं, पहली में नहीं। पहली कक्षा में पूर्ण विराम आदि ही बताए जाते हैं। इस तरह से इसके कुल चार-पांच आधार और हो सकते हैं। एक, विषयवस्तु की साक्षरता शब्दावली पर निर्भर करेगी। दूसरा है पठन सामग्री की सुपाठ्यता। वाक्य कितने लम्बे हों, यह बच्चे की कार्यात्मक स्मृति (वर्किंग मेमोरी) से तय होगा। तीसरा उच्चारण का पैटर्न एवं व्याकरण होगा और चौथा है अनुच्छेद। अनुच्छेद क्यों होता है ? पूरी पठन सामग्री को हम अलग-अलग क्यों करते हैं ? मुख्य पठन बिन्दु और उप-पठन बिन्दु क्यों देते हैं ? संरचना में बदलाव क्यों करते हैं ? यदि इन आधारों को लेकर हम पठन सामग्री को बच्चों के स्तर के अनुसार बनाएंगे तो शायद बच्चों को समझने में आसानी रहेगी और उनकी भाषायी क्षमताओं को आगे बढ़ाया जा सकेगा।

प्रश्न : क्या अनुच्छेद के बारे में दूसरी कक्षा में बताया जाना चाहिए ?

उत्तर : अनुच्छेद के बारे में कक्षा एक में भी बता सकते हैं लेकिन इस पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। कक्षा एक में सिर्फ सरल वाक्यों पर ही ध्यान देते हैं। कक्षा दो में जाकर हम वाक्यों की तार्किक संरचना पर काम कर सकते हैं। हम बताते हैं कि शुरूआत का वाक्य क्या होगा और उसके बाद का वाक्य क्या होगा। यह भी बताया जा सकता है कि जब वाक्यों के बीच संबंध को बनाते हुए हम कुछ लिखते हैं तो अनुच्छेद बनता है। जब कक्षा तीन में बच्चे लिखने लगते हैं तो इसको और आगे बढ़ाया जा सकता है।

इसी तरह पढ़ने के भी स्तर होते हैं - शब्दावली, वाक्य संरचना, व्याकरण और उच्चारण पैटर्न। लिखने के भी स्तर होते हैं। सरल शब्दों से वाक्य बनाना, अनुच्छेद लेखन, उद्देश्यपरक लेखन, वर्णनात्मक लेखन और इसी क्रम में कहानी और कविता भी हो सकते हैं। बच्चों के पढ़ने को हमें कथात्मक से अकथात्मक (फिक्शन से नॉन फिक्शन) की तरफ ले जाना होता है। हमेशा सिर्फ कहानी कहने से ही काम नहीं चलता। कविता भी करवाना जरूरी होता है क्योंकि इसमें वर्णन कुछ अलग तरह का होता है। इसमें कल्पना होती है। इसके माध्यम से महसूस करना सिखाया जा सकता है, संवदेनशीलता सिखायी जा सकती है। दूसरों के बारे में सोचना सिखाया जा सकता है। चरित्र चित्रण के बारे में सोचना सिखाया जा सकता है।

बच्चों को किस स्तर पर क्या सिखाया जा सकता है इस मुद्दे पर अमेरिका में 'अमेरिकन एसोसिएशन फोर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस' करीब 50-60 साल से काम कर रहा है। अगले 50 सालों में और क्या हो सकता है, यह संस्थान इस विषय पर शोध कर रहा है। यह बहुत ही बड़ा काम है। उन्होंने एक नॉलेज एटलस बनाया है। यह संस्थान शोध कर रहा है कि पांच-छः या सात साल के बच्चों की सौर मंडल या पेड़-पौधों या यातायात आदि के बारे में क्या जानकारी होनी चाहिए। इसी तरह 12-13 या 16-17 साल के बच्चों के अवधारणा के क्या क्षेत्र होने चाहिएं, इसके बारे में भी उन्होंने एटलस बनाया है। इसी तरह से भाषा के बारे में भी उन्होंने नॉलेज एटलस बनाया है। इस लिहाज से यह एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है क्योंकि इसमें बच्चों में पढ़ने-लिखने, समझने, सर्जनात्मक लेखन और आलोचनात्मक चिन्तन के चरणों को कक्षा एक से लेकर पांच तक बनाया है। इसमें कक्षा एक से पांच तक की अवधारणाओं को विकसित किया जा रहा है।

प्रश्न : हमारी किताबें सरल से कठिन की ओर जाने की बात करती हैं। हम यह भी देखते हैं कि बच्चे सरल वाक्यों को पढ़कर समझ लेते हैं लेकिन कविता को समझने में स्थिति थोड़ी अलग होती है, उनके लिए कविता का अर्थ समझने में मुश्किल होती है। बच्चे कविता को समझें इसके लिए क्या करना चाहिए ?

उत्तर : इसके लिए स्कूल स्तर पर काम करके देखना चाहिए कि हम किस स्तर पर यह काम कर सकते हैं। कविता से हम क्या सिखाना चाहते हैं, इसकी व्याख्या करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, एक कविता लेकर यह सोचना चाहिए कि हम इससे क्या सिखाना चाहते हैं। एक कविता पर तीन-चार दिन काम कर सकते हैं। बच्चे कविता पढ़कर महसूस करें। बच्चे को पहले यह बताएं कि गद्य का जगत क्या है और यह पद्य से किस तरह अलग है ? कविता में हम भावना के जगत का निर्माण करते हैं। यह कल्पना और सुन्दरता का जगत है। इसमें हम बच्चों को बहुत कम शब्दों और वाक्यों से एक अलग दुनिया में ले जाते हैं। इसमें एक रूपक होता है इसलिए कविता का अर्थ अलग तरह से निकलता है। कविता में हम किसी चीज को सीधे शब्दों में नहीं कहकर अलग तरह से कहते हैं। जैसे कि किसी को 'पत्थर दिल' कहना। कविता में इसका अर्थ सामान्य भाषा से अलग होता है। तब हमें बच्चे के लिए यह समझाना होता है कि इससे हम यहां क्या कहना चाहते हैं। यहां भावना का वर्णन करना होता है। भावना क्या होती है, इसके बारे में चर्चा करनी होती है। फिर छंद की बात की जा सकती है। ये सभी क्षेत्र हैं जिन पर शिक्षक-प्रशिक्षण में काम करना चाहिए। लेकिन शिक्षक-प्रशिक्षणों में इस पर काम नहीं होता। हमारे शिक्षक-प्रशिक्षणों में हम यह काम करते हैं कि बच्चे कैसे अर्थ सीखते हैं ? उनकी पृष्ठभूमि क्या है ? जब बच्चों के साथ इस तरह से काम करके देखते हैं तब कविता का नया अर्थ निकलता है। एक स्तर पर जाकर बच्चों के साथ कविता लिखने पर काम किया जा सकता है। बहुत सामान्य ढंग से हम कुछ शब्द ले सकते हैं। उन शब्दों से अर्थपूर्ण वाक्य बनाए जा सकते हैं। यह करते-करते बच्चे में एक तरह की संभावना, कविता को समझना

और उसके सौन्दर्य बोध का विकास हो सकता है, कविता के लिए भावनात्मकता और एक तरह की भाषा का विकास हो सकता है और तब जाकर कहीं सृजनात्मकता का विकास हो सकता है। इस तरह बच्चों में कविता का एक अनुभव बनता है। यह एक उच्च स्तरीय काम है, मामूली अर्थ निर्माण का काम नहीं है। इसी तरह अलग-अलग विषय में अलग-अलग ढंग से अर्थ निर्माण का काम होता है। लेकिन आमतौर पर शिक्षा में इसे छोड़ दिया जाता है और कक्षाओं में शिक्षाक्रम के बहुत ही छोटे हिस्से पर काम होता है। भाषा शिक्षण के लक्ष्यों पर भी बहुत ही सीमित अर्थों में काम होता है।

प्रश्न : सामान्य तौर पर बच्चों और वयस्कों में भी एक समस्या यह देखी जाती है कि वे छोटे-छोटे स्वतंत्र वाक्य तो बना लेते हैं लेकिन वे वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर संबंध नहीं बना पाते। इसके क्या कारण हैं और इसके लिए किस उम्र के बच्चों के साथ काम शुरू किया जा सकता है ?

उत्तर : यह बहुत सेंसिकल है। एक ही चीज के दो हिस्से हैं। अर्थ निकालने के लिए पढ़ना, याद करने के लिए पढ़ना और इसके बाद पुनः कहने के लिए पढ़ना। बच्चों ने जो पढ़ा है उसे वे कहें इसके लिए यह आवश्यक है कि वे पढ़ने के साथ याद भी रखें। क्यों याद रखना है ? क्योंकि बच्चे ने जो पढ़ा है, सुना है और सीखा है उसे उसी ढंग से कहने की कोशिश करनी होती है। मान लें कि एक घटना है। उस घटना में एक कम है, एक समस्या है और उसका एक हल है, उसका एक विषय है। उसे उसी क्रम से कहना है। बच्चे को यह सारी चीज याद रखनी होती है। इसको हम कहानी का व्याकरण कहते हैं। पहले जब कहानी कहते हैं तो उस पर चर्चा और प्रश्नोत्तर करते हैं। इसके बाद हम कहते हैं कि आओ अब हम इसकी माइंड मेपिंग या वर्ड मेपिंग करते हैं। इसके लिए हम उस कहानी का एक शब्द ले लेते हैं जैसे कि 'सूर्य'। बच्चे इस शब्द से जुड़ते हुए एक-एक शब्द कहें। 30 बच्चे एक बार में 30 शब्द कहेंगे। शर्त यही होती है कि वह शब्द कहानी से जुड़ता हुआ होना चाहिए। एक बारी के बाद दूसरी बारी होती है और फिर तीसरी बारी में हम इसका समूहीकरण करते हैं कि हम कौन-कौन से शब्दों को सहज रूप से जोड़ सकते हैं। उनको कलर कोड करते हैं। फिर बच्चों से पूछते हैं कि कहानी के क्रम के हिसाब से कौनसे शब्द समूह से बात शुरू करें। इसमें हर बच्चा एक-एक वाक्य बनाए और वह दो-तीन-चार शब्द भी जोड़कर वाक्य बना सकता है। ये वाक्य बच्चे अपनी मर्जी से बना रहे हैं। फिर उपसमूह में कहते हैं कि एक-एक वाक्य बनाओ। पहले हम कोशिश करते हैं कि दस शब्द समूह हैं तो दस वाक्य बन जाएं। फिर दूसरी बारी चलती है। इसी प्रकार दस और वाक्य बन जाते हैं। जब बीस वाक्य बन जाते हैं और लगता है कि वाक्य आगे-पीछे हैं और इनमें आपस में कोई संबंध नहीं है तो फिर कहते हैं कि आओ अब इन्हें व्यवस्थित करते हैं। कैसे शुरू करें ? कौनसे वाक्य से शुरू करें? फिर एक बच्चा आता है और वह कहता है कि पहले यह वाक्य आएगा। फिर इसके बाद कौनसा वाक्य आएगा, इस पर बच्चों से चर्चा करते हैं। कोई कहता है यह आएगा। किसी वाक्य पर ज्यादा चर्चा होती है। यह बात भी होती है कि इसे तीसरे या चौथे स्थान पर रख सकते हैं। जब सारे वाक्य क्रम से लिख लेते हैं कि तब इन्हें दोबारा लिखते हैं या बच्चों को अपनी-अपनी कॉपी में क्रम से लिखने दे देते हैं और यह भी कहते हैं कि यदि तुम चाहो तो इस क्रम को जरूरत के हिसाब से बदल भी सकते हो। इस तरह एक दिन में कहानी पढ़ना सीखा। दूसरे दिन माइंड मेपिंग में उसे लिख लिया। फिर सवाल आता है कि इस कहानी में जो नए शब्द आए हैं उनका वाक्यों में इस्तेमाल किया है नहीं। इसके बाद वाक्यों को वाक्य संरचना और विराम चिन्हों के आधार पर संपादित करते हैं। इस तरह करते हुए तीन-चार दिन में यह अभ्यास हो जाता है। फिर यही काम समूह में करने के लिए दे देते हैं कि इस समूह में तुम इस कहानी पर चर्चा करोगे, माइंड मेपिंग करोगे और क्रम से लिखोगे। फिर सब बच्चे अपने-अपने वाक्यों को लिखकर सुनाते हैं। यह पढ़ने को लिखने के साथ जोड़ने का काम होता है। इसी प्रक्रिया में चर्चा करना, आलोचनात्मक चिन्तन की गतिविधियों और तार्किक चिन्तन पर भी काम करना होता है। यही एक तरीका है। इसमें पहले सरल से शुरू करते हुए फिर थोड़े जटिल नियमों के स्तर को लाना और फिर पुनः लिखने का काम करना होता है। इसके बाद सुधार करना और फिर संपादित करना होता है।

प्रश्न : क्या बच्चा जब अपनी अभिव्यक्ति के लिए लिखना शुरू करता है तो उसके भी चरण होते हैं ? कि वह पहले वर्ण में लिखे, फिर शब्द और फिर वाक्य। क्या किसी क्रम के अनुसार इसके चरण बनाए जा सकते हैं ?

उत्तर : सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम सभी चाहते हैं कि बच्चे उद्देश्यपरक लेखन करें। वे खुद जो कहना चाहते हैं उसे कहें। इसलिए जब बच्चे वर्ण सीखते हैं तब हम उसे चित्र बनाना और रंग भरना भी सिखाते हैं। जब चित्र बनाते हैं और रंग भरते हैं तो उस समय बच्चे कुछ ठोस सोचकर चित्र बनाते हैं जबकि उनके चित्रों में वैसा कुछ दिखता नहीं है। फिर भी हमारे पूछने पर वह कहता है कि यह पहाड़ है, यह बर्तन है। जब बच्चा यह सब करता है तो हम कहते हैं कि इसे कोई नाम दे दो या लिख दो। एक दो महीने बाद बच्चे चित्र के साथ एकाध शब्द या वर्ण लिख देते हैं। बच्चे इतना कुछ कहना चाहते हैं कि वे उसे लिख नहीं पाते और एक वर्ण या शब्द ही लिख पाते हैं। जब हम कहते हैं कि बताओ क्या लिखा है तो वे मौखिक रूप से बता देते हैं। इससे बच्चे की स्वतः स्फूर्त लिखने की भावना को बढ़ाना होता है। जब हम बच्चे को कहते हैं कि चित्र

बनाओ तो वे सूरज बनाते हैं और तब हम कहते हैं कि शाबाश! जबकि हम जानते हैं कि उतना कुछ नहीं है और जब वे उसमें हरा रंग भर देते हैं तो हम कहते हैं कि यह रंग क्यों भरा है? और वे जो कुछ भी कहते हैं तब भी हम कहते हैं कि बहुत अच्छा !

इस तरह से हम चित्रकला में उसकी कल्पना और अभिव्यक्ति को पूरी छूट देते हैं। लेकिन जब वह लिखना शुरू करता है तब हम कहते हैं कि यह वर्ण ठीक से नहीं लिखा, वाक्य संरचना ठीक नहीं है। वहां हम यह नहीं सोचते कि वह जो कुछ कहना चाहता है उसे कहने दें, अभी व्याकरण आदि को लागू नहीं करें। जिन बच्चों को इस तरह की छूट दी गई उन बच्चों ने बहुत विकास किया और जिन बच्चों को यह कहा गया कि तुमने यह ठीक नहीं लिखा या यह नहीं किया वे बहुत ही अवसाद में रहते हैं, वे लिखने में हमेशा संकोच करते हैं और आगे लिखना नहीं चाहते। ऐसी स्थिति में जब कहते हैं कि लिखो तो उन्हें बुखार आ जाता है। इन परिस्थितियों को बदलना चाहिए। इसीलिए हम यह कोशिश करते हैं कि स्वतंत्र पठन और स्वतंत्र लेखन के अलग से कालांश होने चाहिएं। सप्ताह में दो दिन स्वतंत्र पठन के और दो दिन स्वतंत्र लेखन के होने चाहिएं। हर रोज एक कालांश होना चाहिए। यदि बच्चे अपने ढंग से लिखने के लिए तैयार नहीं हैं तो आगे जाकर समस्या होगी ही।

प्रश्न : क्या लेखन के भी कुछ ऐसे स्तर हो सकते हैं जैसे कि कला में होते हैं कि बच्चे पहले लाइन खींचेंगे और फिर कुछ आकार-आकृति बनाने की तरफ जाएंगे ? लिखने के विकास या लिखने के भी स्तर होते हैं ?

उत्तर : लिखने में तो शुरूआत शब्द से ही होती है। इसके बाद एक वाक्य लिखना होता है। बच्चे को कहा जा सकता है कि एक शब्द या चित्र या वाक्य में तुम जो भी लिखना चाहते हो उसे लिखो। इसके बाद कहा जा सकता है कि यह एक स्कूल का चित्र है, इसके बारे में जो जानते हो, उसे लिखो। फिर पूछते हैं कि तुमने यह शब्द कैसे लिख दिया ? इसमें बच्चे की थोड़ी मदद करनी होती है। हम शुरूआत में कोशिश करते हैं कि बच्चे का ध्यान जिस चीज में ज्यादा है वह उसे करे। कोई तस्वीर देकर कहते हैं कि इसके बारे में जो लिखना चाहो लिखो या इस चित्र के साथ कुछ लिखा है उसका अर्थ निकालकर देखो। इससे वह प्रेरित हो सकता है। इसके लिए उसे ऐसी सामग्री दे सकते हैं जो उसकी मदद कर सके। बच्चा जो भी लिखकर लाता है तब कहते हैं कि बहुत अच्छा लिखा है। इसके बाद बच्चे से पूछते हैं कि तुम इससे क्या कहना चाहते हो ? बच्चा जो कहना चाहता है और जो उसने लिखा है उसमें हम सुधार कर सकते हैं कि जो तुम कहना चाहते हो उसके लिए कोई नया शब्द लिखना पड़ेगा। यदि तुम यह शब्द लिखो तो तुम जो लिखना चाहते हो वह और अच्छा हो जाएगा। जब उससे पूरी बातचीत हो जाती है तो इसी तरह सुधार के लिए कहते हैं। इस तरह बच्चे का प्रोत्साहन करेंगे तो उसके लिखने में सुधार होगा।

इसी तरह अनुच्छेद में भी सुधार का तरीका है। मान लें कि 30 बच्चों को लिखने के लिए दिया। हम उस एक अनुच्छेद पर बच्चे को बताते हैं कि इसमें और क्या हो सकता था। हम बच्चों को यह नहीं कहते कि इस तरह से लिखो। बच्चों के उपसमूह बना देते हैं और हर समूह में चार या छः बच्चे होते हैं। प्रत्येक बच्चा अपने अनुच्छेद को समूह में पढ़कर सुनाता है। फिर उनको कहते हैं कि समूह में जो अनुच्छेद अच्छा हो उसे चुनकर सुनाओ। इस तरह छः समूहों से छः अनुच्छेद आ गए। फिर बात करते हैं कि इन छः में से कौन-सा अच्छा है और क्यों अच्छा है ? बच्चे आपस में चर्चा करते हैं कि इसके विराम चिन्ह ठीक हैं। इसके वाक्य अच्छे हैं। इसकी हिज्जे सही हैं। इसका शीर्षक अच्छा है। इस तरह से आठ दस बिन्दु आ जाते हैं और उन बिन्दुओं को बोर्ड पर लिख देते हैं। फिर कहते हैं कि जिनके अनुच्छेद में आठ में से आठ बिन्दु आए हैं और अच्छे ढंग से आए हैं, उसको हम पांच में से पांच अंक देंगे। इसी तरह जिसके कम हैं उसको कम अंक मिलेंगे। इस तरह से अपने मूल्यांकन का काम भी बच्चों पर छोड़ा जा सकता है। जब बच्चे अपना मूल्यांकन करते हैं तो बहुत ही ईमानदारी से करते हैं। एक महीने बाद इसी तरह की चर्चा करके फिर से बिन्दु बनाते हैं कि किसी अनुच्छेद को अच्छा क्यों कहा जा रहा है। कभी भी किसी एक ढांचे को अंतिम रूप से नहीं बनाना चाहिए क्योंकि जब बच्चे ऊंचे स्तर पर होंगे तो मानदण्ड भी ऊंचे हो जाएंगे। बच्चों को अपने मानदण्ड खुद निकालने देना चाहिए। हम ढांचे को व्यवस्थित करने में मदद करते रहें। यह भागीदारी से सीखने का और मूल्यांकन का बहुत अच्छा तरीका है।

प्रश्न : बच्चों के लेखन में आमतौर पर एक समस्या यह आती है कि उन्हें जो कुछ भी लिखने दिया जाता है उसे वे एक ही तरीके से लिखते हैं। उदाहरण के लिए, गाय पर निबंध लिखने देना। आमतौर पर बच्चे यही लिखते हैं कि गाय के चार पैर होते हैं। गाय के दो आंख होती हैं। गाय के एक पूंछ होती है आदि-आदि। हर वाक्य में गाय आता है और वर्णन के अलावा अन्य पक्ष आते ही नहीं हैं। ऐसा क्यों होता है और बच्चों लेखन को इससे आगे कैसे ले जाया जाए ?

उत्तर : पहले तो बच्चे ऐसा लिखेंगे ही लिखेंगे। लेकिन हम अगले दिन कहेंगे कि आज बिल्ली के बारे में लिखेंगे। बिल्ली के बारे में दस वाक्य होंगे और तीन-चार वाक्यों से ज्यादा में बिल्ली शब्द का प्रयोग नहीं करेंगे और बिल्ली से वाक्य शुरू नहीं होगा। ऐसा

आहिस्ते-आहिस्ते ही होगा। अच्छे लेखन के लिए बच्चों के लिए पहले अच्छे उदाहरण पेश करने पड़ेंगे। हो सकता है कि लेखन पर एक छोटी कार्यशाला भी करनी पड़े। जैसे हम कुत्ते के बारे में लिखने के लिए कहें और बच्चों से पहले चर्चा करें कि इसे हम चौपाया कहते हैं। हम इसे पालते हैं या जंगल में रहता है ? यह क्या खाता है ? हम हर घर में कुत्ते रखते हैं और इनके बारे में बहुत-सी कहानियां प्रचलित हैं। इनसे हमारी दोस्ती भी हो जाती है आदि-आदि। इस तरह की चर्चा के माध्यम से बच्चों का ध्यान उसके शरीर के वर्णन से आगे चला जाता है। फिर लिखने का अभ्यास दे सकते हैं कि अब तुम इसके बारे में दस वाक्य लिखो। आरंभ में वाक्य अलग-अलग होंगे। इसके बाद कहा जा सकता है कि इन्हें जोड़ने के लिए दो वाक्य और बनाओ। इस तरह की चर्चा पारंपरिक तरीके से लिखने से यानी शरीर के वर्णन से आगे की ओर प्रस्थान होगा। यह हम शिक्षकों को करके दिखाते हैं। बच्चों को लिखना सिखाने और सृजनात्मक ढंग से लिखना सिखाने के बहुत से तरीके हैं। अच्छे लेखन के पैटर्न बच्चों को बताए जाने चाहिएं। नए पैटर्न बनाने और नए पैटर्न को पहचानने का अभ्यास बच्चों को कराना चाहिए। एक अच्छे लेख का पैटर्न हम बताते हैं कि देखो, इस वाक्य का पैटर्न कैसा है। इसमें वाक्य की संरचना कैसी है और जब अपना वाक्य बनाओ तो इसे याद रखना। पहले पहल हमें लिखने के लिए एक उदाहरण देना होता है। इसी क्रम में आगे जाकर नियमों को भी बताया जा सकता है।

प्रश्न : एक समस्या, खासतौर से ग्रामीण क्षेत्र में, यह देखने में आती है कि बच्चे लिखते समय अपनी गांव की बोली या स्थानीय भाषा के शब्दों का प्रयोग करते हैं। वाक्य संरचना भी गांव की बोली जैसी होती है। शिक्षक इसे गलती मानते हैं। इस तरह की गलतियों पर शिक्षक का क्या रुख होना चाहिए ? बच्चे इस समस्या से बाहर कैसे निकलें ?

उत्तर : इसका मतलब है कि बच्चे को जो समझ में आ रहा है उसे वह किताब की भाषा या मानक भाषा में अभिव्यक्त नहीं कर पाता। बच्चों को यह छूट होनी चाहिए और शुरूआत में इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे अपने ढंग से लिख सकें और लिखने में अपने स्थानीय शब्दों का भी इस्तेमाल कर सकें। सभी बच्चों को लिखने का काम देने के बाद और जब बच्चे लिख लें तब उन्हें कहा जा सकता है कि अब तुम अपनी किताब पढ़कर देख लो। यदि हम बिना किताब देखे, बिना रटे लिखना चाहते हैं तो समझ कर लिखना पड़ेगा। किताब को समझकर सही जबाव लिखने के लिए तुम्हारे जबाव को सुधारने की जरूरत पड़ेगी। बच्चे के लिखे जबाव को कहां-कहां बदलना है, यह उसके साथ करेंगे तो उसे यह पता चलेगा कि यह वाक्य कैसे लिखना है और कैसे बदलना है। इस तरह खुली किताब के अभ्यास दिए जा सकते हैं कि तुम पहले अपने ढंग से लिखो, फिर किताब में देखकर परिवर्तन करो। इसके बाद जो सबसे अच्छा परिवर्तन हो उसे बोर्ड पर लिख सकते हैं। इसे हम सही जबाव की तरफ जाना कहते हैं। इसमें बच्चे को यह आजादी होती है कि वह सही जबाव की तरफ जाने के लिए सही कदम बढ़ाए। बच्चों को ऐसा नहीं कह सकते कि तुम समझते नहीं हो या तुमने तो गलत लिख दिया। जब तक वह इससे सहमत नहीं हो तब तक उसे अपने तरीके से लिखने के लिए छूट देनी चाहिए। बच्चे को एक ही तरह से लिखने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। इस तरह बच्चे एक साल बाद सही जबाव लिखने लगेंगे। लेकिन हमारी किताबों में और बच्चों को जो बताया जाता है उसमें ज्यादातर परिभाषाएं ऐसी होती हैं कि उनमें से एक भी शब्द हटा नहीं सकते। हम मानते हैं कि रटना गलत नहीं है लेकिन समझकर रटना सही है। यदि समझ में किसी भी प्रकार के अंतराल हैं तो उनपर चर्चा करनी चाहिए।

प्रश्न : इस चर्चा को समेकित करते हुए एक सवाल और है कि पठन सामग्री का इस्तेमाल करते हुए बच्चे की आलोचनात्मक पठन की क्षमता का विकास कैसे करें ? बीच-बीच में इस आशय की बात आती रही हैं लेकिन एक बार फिर, शिक्षक कक्षा में क्या करे कि बच्चों में आलोचनात्मक पठन की क्षमता का विकास हो ?

उत्तर : इसके लिए एक तकनीक काम में ले सकते हैं। बच्चा जिस स्तर पर पढ़ रहा है उस स्तर की किताब से कोई भी अनुच्छेद ले सकते हैं। इसे हम एक उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं कि एक अनुच्छेद का आलोचनात्मक पठन कैसे किया जा सकता है।

''एक दिन गुरुजी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का एक प्रश्न दिया। बच्चे उस प्रश्न को उस समय हल न कर पाए। गुरुजी ने कहा, 'अच्छा इसे घर से कर लाना।' इसके बाद छुट्टी हो गई और सब बच्चे अपने-अपने घर चले गए। अगले दिन जब बच्चे शाला में पहुंचे तो सबने अपना-अपना गणित का हल किया हुआ प्रश्न गुरुजी को दिखाया। गुरुजी ने प्रश्न का उत्तर जांचा परन्तु किसी का भी हल ठीक न निकला। कुछ बच्चों ने तो गणित के प्रश्न को हल करने का प्रयत्न ही नहीं किया था।

जब सब बच्चे अपनी अपनी कॉपी दिखा चुके तब गोपाल ने अपनी कॉपी दिखाई। प्रश्न का उत्तर ठीक था। गुरुजी प्रसन्न हो गए और गोपाल की प्रशंसा करने लगे। अपनी प्रशंसा सुनकर सब खुश होते हैं परन्तु गोपाल के चेहरे पर उदासी छा गई। गुरुजी ज्यों-ज्यों उसकी प्रशंसा करते गए त्यों-त्यों उसकी उदासी बढ़ती गई। अपनी अधिक प्रशंसा सुनकर वह बालक फूट-फूटकर रोने लगा। गोपाल को रोता हुआ देखकर अध्यापक सहित सभी बच्चे आश्चर्यचकित

रह गए। तब अध्यापक जी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, 'बेटा, तुम तो बहुत योग्य बच्चे हो भला रो क्यों रहे हो।' वह सिसकियां भरते हुए कहने लगा, 'गुरुजी आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं किन्तु यह प्रश्न मैंने अपने आप हल नहीं किया। ये तो मेरे मित्र ने मुझे हल करके दिया है। मुझे अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर दुःख हो रहा है। अध्यापक जी ने गोपाल की बात सुनी तो उनका हृदय गदगद हो गया। उन्होंने उसकी सच्चाई की प्रशंसा करते हुए कहा, 'बेटा एक दिन तुम अवश्य अपना व अपने देश का नाम उज्ज्वल करोगे। बड़ा होकर वह बालक गोपालकृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। देश को स्वतंत्र कराने में गोखले जी का बहुत बड़ा योगदान रहा।''

ये दो अनुच्छेद हैं। इन पर बच्चों के साथ आलोचनात्मक पठन के लिए इस तरह काम कराया जा सकता है- पहले चरण में, 'एक दिन गुरुजी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का एक प्रश्न दिया'। इसके बारे में बच्चों से सवाल पूछ सकते हैं कि गणित किस को कहते हैं ? गणित क्या होता है ? बच्चे के मन में गणित कहते हुए क्या आता है। संख्या, गिनना, जोड़ना, घटाना आदि। फिर पूछ सकते हैं कि गणित में प्रश्न किस ढंग के होते हैं ? एक ही ढंग के होते हैं या अलग-अलग ढंग के होते हैं ? ये कौनसी कक्षा थी ? चौथी या पांचवीं ? गणित की किताब खोलोगे तो सभी सवाल एक ही जैसे होते हैं या अलग-अलग तरह के ? इन सवालों के माध्यम से हम यह जानना चाहते हैं कि बच्चे के मन में गणित की अवधारणा क्या है। बच्चे कह सकते हैं कि दो तरह के सवाल होते हैं। एक, जिनमें सवाल सीधे-सीधे संख्याओं में लिखे होते हैं और दूसरे, जिनमें इबारत लिखी होती है। फिर आगे चर्चा की जा सकती है कि ऐसा तो सब अध्यायों में होता है। क्या तुम यह अंदाजा लगा सकते हो कि गणित की किताब में कितने अध्याय होंगे ? बच्चे कह सकते हैं कि 25-30। बच्चों को यह सीखना होता है कि जितने अध्याय होते हैं उनमें क्रम होता है और दसवें अध्याय पर जाने के लिए इससे पहले के अध्यायों को सीखना जरूरी होता है। यदि पहले अध्याय में गिनना है और दसवें में गुणा है। इसका मतलब है कि दसवें पर जाने से पहले इससे पहले की चीजें आनी चाहिए।

'एक दिन गुरुजी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का एक प्रश्न दिया।' बच्चों से ये सवाल पूछे जा सकते हैं कि, तुम्हें क्या लगता है कि गुरुजी ने गणित का प्रश्न पढ़कर सुना दिया या बोर्ड पर लिखकर बताया ? किताब का चित्र देखकर क्या लगता है कि उन्होंने बोर्ड पर लिखा था ? चित्र देखकर तो लगता है कि जबानी करने को दिया क्योंकि इस चित्र में बोर्ड पर लिखा हुआ तो नहीं दिख रहा। सवाल को सुनकर जबानी हल करने या लिखित रूप में हल करने में क्या फर्क है ? जबानी ढंग से सुनकर सवाल को हल करने को क्या कहते हैं ? जबानी हल करने से पहले क्या उसे पन्ने पर उतारना पड़ता है ? क्या कुछ बच्चे ऐसे भी हो सकते हैं जो जबानी ही हल कर लें ? गुरुजी ने उसका जबाव किस ढंग से मांगा ? इसका मतलब है कि इस सवाल का जबाव इस वाक्य में नहीं है। हम इस सवाल के जबाव को मानकर चल रहे हैं। 'एक दिन गुरुजी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का एक प्रश्न दिया।' यह वाक्य पढ़कर क्या लगता है कि क्या गुरुजी हमेशा प्रश्न देते हैं ? इस वाक्य में 'एक दिन' आने का मतलब है कि हर रोज नहीं देते। इस वाक्य में 'अपनी कक्षा के बच्चों को' आया है। यदि अपनी कक्षा न होता तो क्या होता ? यदि 'अपनी कक्षा' न कहें तो थोड़ा-सा अर्थ अलग हो सकता है। इन दो वाक्यों के अर्थ की तुलना करके देख सकते हैं - 'एक दिन गुरुजी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का सवाल दिया' और दूसरा वाक्य - 'गुरुजी ने कक्षा के बच्चों को गणित का एक सवाल दिया'। क्या इन दो वाक्यों के अर्थ में कोई फर्क हो सकता है ? इसका मतलब हो सकता है कि वे हमेशा इस कक्षा में गणित पढ़ाते हैं, इसलिए इस बात को उजागर करने के लिए अपनी कक्षा कहा। इसका मतलब है कि वे हर रोज ऐसा सवाल नहीं पूछते जैसा आज पूछा है। इस तरह किसी एक वाक्य को अन्य दो-तीन वाक्यों की मदद से और आगे बढ़ाते हैं तो अर्थ स्पष्ट होता है। इसी तरह इस वाक्य में 'प्रश्न दिया' आया है। यदि इस वाक्य में 'दिया' शब्द न दें तो क्या होगा ? इसकी जगह जो सबसे उचित शब्द हो सकता है वह है 'पूछा'। 'दिया' और 'पूछा' में क्या फर्क हो सकता है ? 'दिया' शब्द का अर्थ हो सकता है कि अभी करके लाना है लेकिन सवाल कठिन था इसलिए बच्चे कर नहीं पाए। उस सवाल को हल करना कक्षा में कठिन था। अतः घर से करके लाने के लिए कहा। इसका मतलब है कि जानबूझ कर ऐसा सवाल दिया जिसे बच्चे कक्षा में नहीं कर पाएं। 'बच्चे प्रश्न को उस समय तक हल नहीं कर पाए।' इसका मतलब जब बच्चों को सवाल दे दिया उसके बाद शिक्षक क्या कर रहा था ? 'उस समय' का क्या मतलब होता है ? इसका मतलब कुछ मिनिट होगा या पूरा कालांश ? अभी तक की कहानी से यह स्पष्ट नहीं हुआ है।

आलोचनात्मक पठन की क्षमता विकसित करने का मतलब है कि हम हर वाक्य पर चर्चा कर रहे हैं। हम ऐसे सवाल उठा रहे हैं जो बहुत ही जरूरी सवाल हैं और जिनका जबाव इसमें होना चाहिए। लेकिन इन सवालों के जबाव इन वाक्यों और इसके पूर्व के वाक्यों में नहीं है। इस तरह के सवाल उठाना बहुत जरूरी है जो कि किसी परिस्थिति का विश्लेषण करने के लिए जरूरी हैं। गुरुजी ने कहा इसे घर से करके लाना। क्या इसमें यह निहित है कि घर में मदद करने के लिए कोई होगा। इसका मतलब है कि घर से खुद करके लाने में मजा है। गुरुजी को यह पता था कि बच्चे दूसरों से करवा के ला सकते हैं लेकिन गुरुजी ने फिर भी घर से करके लाने के लिए दिया। 'इसके बाद स्कूल की छुट्टी हो गई।' इसका मतलब उस कक्षा में

पूरे तीस मिनिट में क्या किया होगा ? हो सकता है कि सवाल अन्तिम कालांश के अन्तिम दस मिनिट में दिया हो। हो सकता है कि यह उसी कालांश में दिया हो लेकिन सवाल देकर कुछ और काम करने लग गए हों। इन तीन वाक्यों को पढ़ने में परिस्थिति के विश्लेषण आदि को याद करना पड़ा। इसको हम आलोचनात्मक पठन या विश्लेषणात्मक पठन कहते हैं। शिक्षक सिर्फ सवाल पूछ रहा है और चर्चा में जबाव ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा है। उसी समय बच्चे इन सवालों के जबाव दे रहे हैं। जो भी सवाल पूछे जा रहे हैं ये बहुत कठिन सवाल नहीं हैं लेकिन बहुत ही जरूरी सवाल हैं। और ऐसा हो सकता है कि ऐसे सवाल बच्चे ने कभी नहीं सोचे हों। ये ऐसे सवाल हैं जिनके बारे में आमतौर पर यह माना जाता है कि यह बहुत ही सामान्य सवाल हैं। बच्चों का ध्यान अर्थ और उसके निहितार्थों की ओर ले जाने की यह एक तकनीक है। जब इस तरह की चर्चा हो जाए तब पूरे अध्याय के बारे में चर्चा की जा सकती है। यह एक तरीका है जिसे हम पिछले बीस वर्षो से काम ले रहे हैं। इसके बाद बच्चों को समूहों में बिठाकर कहा जा सकता है कि अब तुम अपने साथियों से जो भी सवाल पूछना चाहो पूछ सकते हो। इस तरह से काम करने से बच्चों का मन खुल जाता है और बच्चे धीरे-धीरे बेहतर सवाल उठाने में सक्षम हो सकते हैं। इसी प्रक्रिया से आलोचनात्मक चिन्तन का विकास होता है। बच्चों को यह छूट मिलनी चाहिए कि उनके दिमाग में जैसे भी सवाल आएं वे उन्हें पूछ सकें। और इसके बाद यह चर्चा की जा सकती है कि कौनसा सवाल अच्छा है।

प्रश्न : आपने जिन तरीकों से भाषा शिक्षण, आलोचनात्मक पठन और बच्चे की अभिव्यक्ति के विकास की बात की है सवाल यह आता है कि इन तरीकों से काम करें तो बच्चों का मूल्यांकन कैसे किया जाए या वास्तव में हम बच्चों की क्षमताओं को जानना चाहते हैं तो फिर मूल्यांकन कैसे करें ?

उत्तर : शिक्षकों के लिए मूल्यांकन का मतलब है कि हम बच्चों को जो पढ़ा रहे हैं उसे उन्होंने कितना सीखा है और जितना सीखा है उसे हम आगे कैसे बढ़ा सकते हैं। तीन चीजें इसमें आती हैं। इसमें जो तकनीक हम काम में लेते हैं उसे रूब्रिक्स कहते हैं। इस तकनीक में हमारा मूल्यांकन भी आता है और बच्चों द्वारा स्वयं का किया गया मूल्यांकन भी आता है। हमारे लिए इसका कोई मतलब नहीं है कि बच्चे ने सही किया है या गलत किया है। यदि हम बच्चे की लिखित क्षमता का मूल्यांकन करना चाहते हैं तो इसके लिए अनुच्छेद लिखने देते हैं। अब यदि हम इसका मूल्यांकन करना चाहें तो एक तो होगी विषयवस्तु, दूसरी होगी लेखन की शैली और तीसरा हो सकता है व्याकरण। इन्हीं आधारों पर बच्चों को अंक दिए जाते हैं। यदि मान लें कि दस अंक में से चार अंक विषयवस्तु के हैं और उसने पूरी विषयवस्तु को लिख दिया है तो उसे चार नम्बर मिल जाएंगे। इसी तरह बच्चे के हर स्तर पर काम का मूल्यांकन कर सकते हैं।

इसके अलावा हमने हर अध्याय को तीन हिस्सों में बांटा है। एक है तथ्यात्मक और सूचनात्मक। इसमें ज्यादातर सवाल इस तरह के पूछे जाते हैं कि कब, क्या, कहां या कौन कहां गया। दूसरा स्तर व्याख्यात्मक होता है। इसमें सवाल कुछ इस तरह के होते हैं कि क्यों कहा होगा ? बच्चे क्या करेंगे ? इस तरह से जब पूछते हैं तो बच्चों को सोचना पड़ता है और घटनाओं के तार्किक संबंध को देखना होता है। तीसरा है खुली प्रतिक्रिया। साधारण तौर पर बच्चों की शिक्षक के प्रति धारणा क्या है ? इस पर हम दस लाइन लिखवाते हैं। इसके लिए बच्चे की समझ, विचार, मूल्य और अनुभव होने चाहिएं। यदि शिक्षक बच्चों को डांटते हैं तो इसे कहने के लिए साहस भी चाहिए। इस तरह से बच्चों को खुली प्रतिक्रिया के लिए तैयार करते हैं।

इसके अलावा मूल्यांकन की एक अन्य रणनीति भी रखते हैं कि प्रश्न जिस भी तरह का हो शिक्षक के मूल्यांकन करने से पहले बच्चे स्वयं के स्तर पर और समूह के स्तर पर मूल्यांकन करें। यह मूल्यांकन करने का प्रस्थान बिन्दु होता है। मूल्यांकन की प्रक्रिया में शिक्षक को थोड़ा अलग हटकर पहले बच्चों को ही यह जिम्मेदारी देनी चाहिए कि पहले वे ही अपने काम को जांचें और आपस में बातचीत करके ग्रेडिंग करें। फिर जाकर शिक्षक को इसमें हस्तक्षेप करना चाहिए कि बच्चों को क्या चीजें समझ नहीं आ रही हैं। जो जबाव चाहा गया था वह आ रहा है या नहीं। थोड़ा टेढ़ा प्रश्न होने के बाद भी बच्चों ने रटा हुआ ही जबाव लिखा, और सवाल को ठीक से नहीं समझा। इसके अलावा यह भी हो सकता है कि कुछ बच्चों ने जबाव तो दिया लेकिन उसके साथ एक चित्राकंन भी कर दिया या भाषा में तो संक्षेप में लिखा लेकिन चित्रांकन अच्छा किया। चित्रांकन में कई स्तरों को दर्शा दिया जबकि यह नहीं कहा गया था कि चित्र बनाओ। अतः शिक्षक की जिम्मेदारी है कि वे उच्च स्तर पर मूल्यांकन करें और बच्चों को बताएं ताकि बच्चों को पता चल सके कि यदि उन्हें अपने अगले जबाव को और बेहतर करना है तो कैसे कर सकते हैं। यह मूल्यांकन बच्चे के सीखने को बेहतर करने के लिए होता है। और अन्त में साल के आखिर में जाकर ग्रेडिंग कर सकते हैं। बहुत से लोग ऐसे सवाल पूछते हैं जो सीधे किताब से जुड़े नहीं होते। इसके लिए जरूरी है कि बच्चे को कोई एक समस्या दी जाए और उसकी प्रतिक्रिया को समझा जाए। इसमें बच्चों की सोचने की उच्च क्षमता, विचार और चिन्तन पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है।

आजकल स्कूल कहते हैं कि हमारे सौ बच्चों में से चार बच्चे फलां जगह चयनित हो गए। इसमें समस्या यह है कि वे बाकी 96 बच्चों के बारे में सोचते ही नहीं हैं। हम कहते हैं कि मूल्यांकन अलग-अलग और सर्जनात्मक तरीके से होना चाहिए। लेकिन मूल्यांकन के साथ

यह भी देखना चाहिए कि यदि मूल्यांकन के साथ हम बेहतर सिखाने का अनुभव नहीं दे रहे हैं तो ऐसे मूल्यांकन से क्या हासिल होगा। बच्चों को जो चीज सिखाई ही नहीं है उसे हम मूल्यांकित कैसे करें। ऐसे में यह जिम्मेदारी शिक्षक पर आ जाती है कि वह मूल्यांकन के उच्च स्तर पर जरूर ले जाए। लेकिन बच्चों को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए तैयार करना पड़ेगा। तैयार करने एवं सीखने के अनुभव के लिए इस ढंग के सवाल कक्षा में भी पूछने होंगे। उन संदर्भों में भी पूछने होंगे जो उसकी किताब में हैं। किताब से बाहर के सवाल भी पूछने होंगे जो उस संदर्भ से जुड़ते हों। मूल्यांकन पर हम इसलिए ध्यान देते हैं क्योंकि मूल्यांकन अपरोक्ष रूप से शिक्षा के उद्देश्यों की तरफ ध्यान दिलाते हैं। लेकिन देखा यह जाता है कि कक्षा में शिक्षक जिस भी तरीके से काम कराते हैं वे शिक्षा के उद्देश्यों से जुड़े हुए ही नहीं हैं। इसीलिए वे अपने ही तरीके से पढ़ाते रहते हैं और मूल्यांकन भी अपने ही तरीके से करते हैं।

यदि हम मूल्यांकन का यह तरीका काम में लेते हैं तो इसका मतलब होगा कि इसे सिर्फ वर्ष में एक बार नहीं किया जा सकता। इसके लिए कक्षा में पढ़ाने की परिभाषा को ही बदलना पड़ेगा। इसके लिए बच्चों को स्मरण कर पाने (कि उन्होंने क्या सीखा है), उनके अनुभव को संजो पाने, वर्णन से संदर्भ बता पाने, किसी तथ्यात्मक सूची या पठन सामग्री को पढ़कर उस पर चर्चा कर पाने, चर्चा करके वर्कसीट बना पाने आदि जैसे काम कर पाने की क्षमता को ही सही सीखना मानना पड़ेगा। यह सब करने के लिए सतत मूल्यांकन करना पड़ेगा। शिक्षक लगातार यह देखता रहे कि बच्चे को किस जगह पर समस्या आ रही है और उसे किस तरह से दूर करे। इसके लिए बच्चों को लगातार फीडबैक देना और उनके द्वारा किए गए काम को भी जांचते रहना होगा। इन सबका लेखा-जोखा रखने की भी आवश्यकता होगी। क्योंकि बच्चों की गलती के कारणों को जानने और उन्हें दूर करने के लिए लेखा-जोखा भी तैयार करना होता है। यदि कक्षा में बच्चों के सीखने को महत्त्व दिया जाए तो उसके आधार के रूप में बच्चों की उपलब्धि का एक हिस्सा लिखित में भी होना चाहिए।

प्रश्न : यह मेरा अन्तिम सवाल है। हाल ही में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : 2005 के बाद एनसीईआरटी ने भाषा की जो किताबें बनाई हैं, इनके बारे में आपकी क्या राय है ?

उत्तर : इसमें कोई संदेह नहीं है कि किताब पहले से बहुत अच्छी हैं। किताब बनाने का यह एक अच्छा प्रयास हुआ है। यदि संक्षेप में कहें तो इन किताबों में निर्देशों के डिजाइन बहुत ही अच्छे हैं कि इन पुस्तकों को किस ढंग से इस्तेमाल किया जाए। यह भी स्पष्ट ढंग से सामने आया है कि इन पुस्तकों को विविधता के साथ कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है। लेकिन यह भी वास्तविकता है कि हमारे आम स्कूलों में रटने का जो तरीका चल रहा है उसमें शिक्षक इस किताब को उस ढंग से इस्तेमाल नहीं करेंगे जिस विचार के तहत ये किताबें बनाई गई हैं या कहा जा सकता है कि इन किताबों से जो अपेक्षा है। इन किताबों में विषयवस्तु बहुत कम है और सवाल बहुत उठाए हैं। केस स्टडी बहुत दी हैं। गतिविधियां बहुत दी गई हैं जैसे कि सूचनाओं को भरो और इसको करके देखो। एनसीईआरटी ने करीब 40 साल पहले भी विज्ञान में 'लर्निंग वाई डूइंग' की किताब निकाली थीं और बाद में मजबूर होकर उन्हें हटाना पड़ा। शिक्षक कहते हैं कि हमारे पास इतना समय कहां है और बच्चों के साथ इनको अलग-अलग कैसे करें। कक्षा में 60-70 बच्चे बैठे हैं और कालांश एक है। इसको पढ़ाने के लिए एनसीईआरटी ने अन्य किताबें और सामग्री बहुत कम बनाई है। क्योंकि इन किताबों में सवाल बहुत उठाए गए हैं और उसकी पूर्ति के लिए शिक्षक को अलग-अलग सामग्री काम में लेनी पड़ेगी। और वास्तविकता यह है कि कोई शिक्षक अन्य सामग्री पढ़कर या तैयारी करके शिक्षण नहीं कराता है।

प्रश्न : यह एक वास्तविक समस्या है। लेकिन क्या तर्क यह है कि शिक्षक इनका इस्तेमाल ठीक से नहीं कर पाएंगे, इसलिए इन किताबों में समस्या है या समस्या इन किताबों के पीछे के नजरिए में है ? आप इन किताबों को नजरिए की दृष्टि से कैसे देखते हैं ? क्या इनके नजरिए में भी कोई समस्या है ?

उत्तर : एक बात तो यह है कि जिन्होंने भी इन किताबों को बनाया है उन्हें भी सीखने की जरूरत है। वे कक्षा में जाएं और कक्षा में पढ़ाएं। किस ढंग से पढ़ाने में कितना समय लगेगा और बच्चों की प्रगति क्या होगी, इसको दर्ज करके देखना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को इस उम्र के बच्चों के साथ काम करने का अनुभव नहीं है वे बिना अनुभव के किताब कैसे बना सकते हैं ! सिर्फ सिद्धान्त पर आधारित करके या निर्देश डिजाइन करके आपने किताब बना दी। इसमें चमक है, मजा है। यदि किताब बनाते हुए 70-80 प्रतिशत स्कूलों में अध्ययन नहीं किया जा सकता तो कम से कम एनसीईआरटी के चार मॉडल स्कूलों में तो करके देख ही सकते थे। लेकिन इन पुस्तकों लेकर स्कूलों में काम किया ही नहीं गया। जब आपने अपने स्कूलों को ही प्रयोग करके देखने की जगह नहीं बनाया तो दूसरों को कैसे कह सकते हैं ? ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। जब नई किताब बनती हैं तो ज्यादातर स्कूल पहले तो उत्साहित होकर किताबें ले लेते हैं लेकिन बाद में वे देखते हैं कि इसमें शिक्षण के लिए विषयवस्तु बहुत कम है। और इसका नतीजा यह हो रहा है कि निजी प्रकाशक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के निर्देशों के अनुसार तैयार पाठ्यक्रम को काम में लेते हुए पहले जैसी ही किताबें बना रहे हैं। ◆